ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

आधुनिक पंजाबी लोक गायकी की परम्परा का विकास

मिस शरनजीत कौर परमार

सरकारी कालज लडकीयां, लुधियाना।

पंजाब की भूमि वह गौरवशाली भूमि है जहाँ सभ्यता, संस्कृति और साहित्य का विकास हुआ।इस भूमि को वीरभूमि कहा जाए तो कोई अतिकथनी नही होगी। आज यहां पंजाब ने विद्या, भाषा और ज्ञान के क्षेत्र मे उन्नति की है वहीं संगीत के क्षेत्र मे भी बडा ऊचा मुकाम हासिल किया है। खास तौर पर पंजाबी लोक गायकी के क्षेत्र मे। यह गायकी लोक संगीत से निकली एक ऐसी विधा है जिसके आज कई वर्ग प्रचार में है। पंजाबी लोक गायकी की भिन्न भिन्न गायन विधायो पर सांस्कृतिक, सामाजिक, भूगौलिक तथा राजनैतिक उथल पुथल का प्रभाव देखने को मिलता है।

मानव हृदय को सृष्टि की हर सुन्दर वस्तु आर्किषत करती है परन्तू एक ही तरह का कलात्मक सौन्दर्य उसे आन्नदित नही कर सकता। जैसे जैसे मानव की रुचियों और विचारों में परिवर्तन आता है उसका कला के प्रति भी समझ और सोच परिवर्तित होती रहती है। कोई भी कला हो अपनी परिवर्तनशीलता के कारण ही विकसित होती है। इस लिए परिर्वतनशील कला ही उसे अधिक प्रभावित करती है।

आज विज्ञान ने यह साबित कर दिया है कि संगीत का प्रभाव केवल मनुष्य या पशु पक्षियों पर ही नही बलकि प्रकृती पर भी देखने को मिलता है। अधिक अन्न उत्तपाद के लिए,मानसिक रोगों के उपचार के लिए,सामाजिक और धार्मिक कार्यों में, जीवन के हर पहलू मे संगीत का महत्त्व दिखाई देता है।संगीत मनुष्य के व्यक्तित्त्व विकास मे सहायक है।संगीत के क्षेत्र में शास्त्रीय और लोक संगीत के ईलावा एक तीसरा प्रकार भी प्रचलित है जिसको सुगम संगीत या पापुलर संगीत कहा जाता है आज की पंजाबी लोक गायकी को हम इस श्रेणी मे रख सकते हैं।

पंजाबी लोक गायकी में परम्परा का विशेष स्थान रहा है।परम्परा का शाब्दिक अर्थ है "किसी संस्कृति का पीढी दर पीढी क्रम से अपने मूल रूप में सुरक्षित रहना "। परम्परा ही प्राचीन संगीत के संस्कारों को जीवित और सुरक्षित रखती है व उसे प्रकाशित करती है। परम्परा किसी भी कला का अभिन्न अंग है। परम्परा के अन्तरगत विकसित होने वाली कलाओं में सदैव कोई उद्देश्य दर्शन व आध्यात्मिक दृष्टिकोण होता है।बेशक किसी भी गायक की आवाज के गुण-धर्म तथा व्यक्तिगत रूप में स्वभाविक सीमांए गायकी में भिन्न भिन्न वर्गों की उत्पत्ति का कारण बनती है।जब मानव ने अपने मन के भावों को प्रकट करने के लिए शब्दों का सहारा लिया और अपने भावों की तरजुमानी करती धुनों में उसे व्यक्त किया तो वो जनसाधारण का संगीत बन गया। भिन्न भिन्न देशों में लोक संगीत की पेशकारी बेशक अलग अलग ढंग से होती है परन्तु उसका मौलिक रूप और उसके सृजनात्मक तत्व हर जगह समान ही होते है।

आज समाज में संगीत की बारीकियों को समझने वाले श्रोताओं की जगह इसे मनोरंजन के रूप में ग्रहण करने वाले श्रोताओं की गिनती कहीं अधिक है। पंजाबी लोक गायकी का आज जन साधारण में मकबूल होने का बड़ा कारण इसका साधारण होना है।इसकी कई वनगींया प्रचार में है।इस मे सरल रुप से भावों की अभिव्यक्ति की जाती है जो साधारण श्रोता को भी समझ आ सके।पेशेवर गायक लोगों की कृति को लोगों के समक्ष लोक गाथा, लोक किस्से,लोक वारें और लोक गीतों के रुप में पेश करते आए हैं।

संगीत जगत में पंजाबी लोक गायकी की एक अमीर और प्रभावशाली परम्परा है।।पंजाबी लोक गायकी के दो प्रकार शुरू से ही प्रचलित रहे है।

पहला प्रकार: जिसमें कई वर्ष पहले से गाये जाने वाले गीतों व किस्सों को गाये जाने की मौखिक परम्परा आती है।

दूसरा प्रकार:जिसमें समय, स्थान, प्रस्थिती या किसी खास उद्देश्य हेतु लिखे गीतों को गाये जाने की परम्परा रही है।वास्तव में पंजाबी गीत ही पंजाबी लोक गायकी का अधार स्तंभ है चाहे वो परम्परागत रूप में चलते आ रहे लोक गीत हो या किसी गीतकार द्वारा रचित गीत हों।

प्रारम्भिक दौर में यह गायकी गायन में निपुन परन्तु अनपढ व्यवसायी लोगों के हाथ में रही और गायकोंकी कुछ खास श्रेणीयां प्रचार में आई जैसे भट्ट, चारण, डूम और मरासी। इन गायकों ने इस कला को व्यवसाय के रूप में अपनाया।प्राचीन समय में आज जैसी वैज्ञानिक सुविधा उपलब्ध नहीं थी और न ही टैकनोलोजी का इतना विकसित रूप प्रचार में था।यह कला पहले पहल कबीलों मेंईष्ट देव की आराधना के लिए और पारिवारिक रीति रिवाजों को मनाने के लिए, फिर राज दरबारों में राजाओं की स्तुति और वंशावलियां पढने हेतु विकसित हुई।कवि दरबारों में प्रसिद्ध पंजाबी कवियों द्वारा, जन साधारण में नव चेतना का संचार करने हेतु और जन मनोरंजन के उद्देश्य को लेकर भिन्न भिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रभावों से ओत प्रोत होती हुई पंजाबी लोक गायकी का आधुनिक रूप आज हमारे सामने है।

कला कोई भी हो जब तक परिवर्तत होकर जन साधारण को प्रभावित नहीं करती उस कला का विकास नही हो सकता और पंजाबी लोक गायकी के संदर्भ में भी यह बात लागू होती रही है जो

लोक रुची अनुसार हर काल में परिवर्तित होकर विकसित होती रही। जैसे जैसे सभ्यक समाज के रहन सहन, खान पान में बदलाव आता गया इस का दायिरा विशाल होता गया और गायकी के विभिन्न वर्ग प्रचार में आए जैसे लोक संगीत, धार्मिक गायकी, लोक पक्खी गायकी, साहित्यक गायकी, परिवारिक गायकी और पंजाबी पौप।

प्रचलित वर्गोंमेंपंजाबी गायकी आज अपनी चर्म सीमा पर विकसित है। पंजाबी लोक गायकीके विकास क्षेत्र मे जिन तत्वों की अहम भूमीका रही वो निम्नलिखित है जैसे:

(1) मौखिकता (2) काव्य (3) धुन और लय (4) साज(5) पहिरावा (6) पेशकारी (7) लोक प्रवानगी

1) मौखिकता :- पारम्परिक गीत इस श्रेणी में आते है जिनमें पीढी दर पीढी गाये जाने वाले लोक गीत, माहीया,छल्ला, जुगनी, टप्पे आदि के ईलावा ईश्कीया किस्से आते हैं जिन मे गुरूमुख सेचली आ रहीपारम्परिक गीतों की रचनाए सुनने को मिलती हैं।वास्तव मे गीत किसी एक व्यक्ति,जाति, धर्म या समाज की अमानत नही होते, इनका घेरा विशाल है।

2) काव्य:- गीत के शब्द में ही संगीत है, भाव है, रस है। पंजाबी लोक गायकी मेंलोक साहित्य और कावि साहित्य की भरमार मिलती है जिसका मुख्य उद्देश्य जन मनोरंजन करना ही रहा है परन्तु इसके साथ साथ प्राचीन इतिहासिक किस्सों और सामाजिक विष्यों पर आधारित गीत गाए जाने का प्रचलन भी रहा है जिनका मकसद मनोरंजन के साथ साथ जन साधारण में नव चेतनता का संचार करना भी रहा है। आज पंजाबी गीतों में अन्य भाषाओं का मिश्रण होने लगा है। विश्वीकरण के प्रभाव हेतु आज इस प्रकार के गीत अधिक प्रचलित होते है जिनमें विदेशी भाषाओं का इस्तेमाल हो। आज पंजाबी गीतों में रैप गाये जाने का प्रचार अधिक हैं जिसमें गीत के भाव को हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में कहानी के रूप में गीत की धुन और लय में बाँध कर गाया जाता है।

पंजाबी गीतो मे आ रहे भाषा के बदलाव को लेकर प्रो. कृपाल सिंह कसेल अपनी पुस्तक "पंजाबी साहित दी उत्पत्ति ते विकास" मे लिखते है कि 'किसी भाषा के साहित्य को उस भाषा को बोलने वाले लोगो को वास्तविक जीवन से अलग नही किया जा सकता।जब लोगों की मनोवृति मे परिवृतन आने लगता है तो साहित्य की रुपरेखा भी बदलने लगती है।आज के पंजाबी गीतो मे यही प्रभाव देखने को मिलता है।'जीवनशैली मे विकासशीलता आने से संस्कृतिक परिवृतन आना स्वभाविक है।

(3) धुन और लय:- पंजाबी गीतों में धुन और लय उनकी सबसे बडी पहचान रही है जैसे हीर, जुगनी, छल्ला, मिर्जा इत्यादि। इन गीतों की लोकप्रियता होने के कारण ही आज विदेशी धरती पर और बालीवुड में पंजाबी गीतों का बोलबाला है। आज हिप हाप और पंजाबी पौप के नाम के अन्तरगत पंजाबी गीतों में पश्चिमी संगीत के रिमिक्स द्वारा गाये जाने का प्रचलन बढ रहा है जिस वजह से ही पंजाबी लोक गायकी आज पूरे विश्व में अपना एक विशेष स्थान बना चुकी है और विदेशी धरती पर भी ये गायकी पापुलर गायकी है।

(4) साज:- पंजाबी लोक गायकी की पहिचान इसके अपने लोक साज, सारंगी, डढ, तुम्बी, अलगोजा, ढोल और ढोलकी मुख्य रूप से प्रचार में रहे है। आज नई टैकनोलोजी के आने से बहुत सारे विदेशी साजों का प्रयोग भी पंजाबी गीतों में होने लगा है। ता कि हर देशी विदेशी श्रोता इसका आनंद ले सके।

(5) पहिरावा:-पंजाबी गायक का पहिरावा ही पंजाबी लोक गायक की मुखय पहिचान रहा है जो पंजाबी कलचर को प्रमोट करता था परन्तू आज विश्वीकरण के प्रभाव हेतु एक भारी बदलाव गायकोंके पहिरावे मेंआया है जिस मेंपश्चिमी पहिरावा, पश्चिमी हाव-भाव, बालोंके नए नए स्टाईल और हाथोंव गर्दन पर टैटूज बनवाने का रिवाज बढ रहा है, जिसने एक मिश्रित कलचर को जन्म दिया है।

(6) पेशकारी:- हर एक कलाकार का प्रस्तुति का अपना अलग अन्दाज होता है। जिसका मुख्य उद्देश्य जन मनोरंजन करना ही होता है। पहले पहल गायक साधारण तूंबे अलगोजे और ढोलकी के साथ अपनी बुलन्द आवाज से, खुले अखाड़े में अपनी कला का प्रदर्शन करता था। आज पेशकारी के नए नए साधनों ने गायक की पेशकारी को नया रूप दिया है जिसमें आज टैकनोलोजी की बहुत बड़ी भूमिका रही है। इसके अतिरिक्त गायक अपनी कृति को अधिक रोचक बनाकर जन साधारण के सनमुख पेश करता है। आज गीतों की वीडीयोज द्वारा गीतों को अधिक से अधिक रोचक बनाकर श्रोता और दर्शक को दिखाया जाता है। आज पेशकारी के स्थल भी बदल चुके है। आज का गायक इन्टरनैट की सुविधा से अपनी कला का प्रदर्शन कुछ ही सैकन्डस में देशों विदेशों में बैठे श्रोताओं तक कर सकता है।

(7) लोक प्रवानगी:- ऐसा कहने से तात्पर्य है कि जब पंजाबी संस्कृति में विदेशी संस्कृति का सुमेल हुआ तो पंजाबी गायकी को सिर्फ पंजाब में ही नहीं विदेशी धरती पर भी प्रोत्साहन मिला। आज पंजाबी लोक गायकी अपनी परम्परा और मौलिकता को लेकर आगे बढ रही है बेशक लोक रुची के अनुसार उसकी पेशकारी के अन्दाज में रोज नये नये बदलाव आ रहे हैं।

इस प्रकार 20वीं शताब्दी में आए सामाजिक बदलाव ने पंजाबी लोक गायकी के विकास में अहम भूमिका निभाई जैसे जैसे हालात बदले, रहन सहन बदला, कमाई के साधन बदले, आर्थिक हालातों और समाजिक परिवर्तन का प्रभाव गीतों के विषयों पर पड़ा, गायकों की पेशकारी बदल गई, पहिरावा बदल गया, पेशकारी के स्थल बदल गए। कावि साहित और लोक साहित लिखती रूप में आने से कई नए विषय मंच से प्रसारित किए जाने लगे। कवि दरबारों से होती हुई साहित्यक रचनाएं गायकी में प्रवेश कर गई और दूसरी तरफ जन मनोरंजन के लिए गीत लिखे जाने लगे।

गायकी के विकास पक्ष में पंजाब में होने वाले परम्परागत मेले और खुले अखाड़ों की भी अहम भूमिका रही है जिन में आज विशेषतौर से दोगाणा गायकी का प्रचलन देखने को मिलता है। संचार माध्यमों की आमद से पंजाबी लोक गायकी में एक क्राँतीकारी परिवर्तन आया।आज पंजाबी लोक गायकी के प्रचार व प्रसार में प्रिन्ट मीडिया और खास कर इलैकट्रानिक मीडिया का बहुत बड़ा

योगदान देखने को मिलता है।आज की पीढी फिऊजन संगीत, हिपहाप के ईलावा, गायकी की विभिन्न परम्परागत शैलियों को भी रिसिक्स के साथ सुनना पसंद करती है। विश्वीकरण ने केवल समाज को ही नहीं हमारी रोजमरा की जिन्दगी को भी प्रभावित किया है।पंजाबी गायकी के विकास का बड़ा कारण विश्वीकरण ही नहीं बल्कि संगीत का व्यापारीकरण भी है। आज गायकी में आए नए रुझानों ने इसकीरूपरेखा ही बदल दी है और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पंजाबी गायकी की परम्परा अपने विकसित रूप में प्रचलित है।आज जहाँ इसका इतना विकास हो रहा है वहीं कुछ विकार भी इसमें दृष्टिगोचर हो रहे है जैसे:-

- पंजाबी गीतों के साथ अशलील वीडीयोज का बनना।
- निम्न शब्दावली का प्रयोग।
- भिन्न भिन्न साफटवेयर के इस्तेमाल का साजिन्दों के व्यावसाय पर बुरा प्रभाव।
- मंच प्रदर्शन में लोक साजों के कम इस्तेमाल से उनकी पहचान कम होना।
- पुराने बुजुर्ग गायकों की मौलिक रचनाएं खत्म होने की कगार पर।
- आर्थिक मंदहाली के शिकार कुछ एक बुजुर्ग कलाकार।

आज हम कह सकते है कि जहां टैकनोलाजी ने आज के नौजवान वर्ग के लिए रोजगार के नए क्षेत्र खोले हैं वहीं संगीत इन्डस्ट्री में भी नौजवान वर्ग के लिए रोजगार सम्बन्धी बहुत से क्षेत्र सामने आए हैं चाहे वो संगीत निर्देशन हो, अदाकारी हो, गीतकारी हो या गायकी। अन्त में मैं यही कहना चाहुंगी कि पंजाबी लोक गायकी बेशक आज पूरे विशव मे अपने ऊचे मुकाम पर है परन्तु इस महान धरोहर को हमें आज संभालने की जरूरत है ता कि बदलते युग के साथ इसमें आने वाले परिवर्तनों से एक अच्छे समाज का निर्माण हो सके और पंजाब की महान संस्कृति वक्त के तेज बहाव मे कही धूमिल न हो जाए।

सहायक पुस्तक सूची

1. प्रो. कृपाल सिंह कसेल, "पंजाबी साहित दी उत्पत्ति अते विकास"
2. पन्ना लाल मदान, "पंजाब विच संगीत कला दा निकास ते विकास"
3. करनैल सिंह थिंद, "पंजाब दा लोक विरसा"
4. डा. हरिन्दर कौर सोहल, "पंजाबी गायकी विभिन्न पासार"
5. डा. हरिन्दर हुन्दल, "पंजाब दी लोक संगीत परम्परा अते समकाल"
6. गुरबख्श सिंह फरैंक, "सभियाचार अते पंजाबी सभियाचार"
7. पौप म्यूजिक अंक जनवरी फरवरी 2000